श्री तुलसी - शालिग्राम गाथा

तर्ज़ : इक मतवारे ने लूट लिया दिल मेरा

सारे बोलो जी, जय तुलसी जय श्याम,
जय जय विष्णु हरि वृंदा वर, जय जय शालिग्राम |

1. जालंधर राक्षस ने जग में, था उत्पाद मचाया,
   शिव उपासक सति वृंदा के, तप बल उसे बचाया ।
   पार्वती पाने को जालंधर, पहुंच गया शिवधाम,
   - सारे बोलो जी ।।

2. अन्तर्ध्यान हो पार्वती माँ, पहुंची विष्णु पास,
   जालंधर का नाश करो हरि, हरो जगत का त्रास ।
   ऋषि रूप धर विष्णु विश्वपति, पहुंचे वृंदा धाम,
   - सारे बोलो जी ।।

3. परम कौतुकी, परम कृपालु, लीला अजब रचाई,
   देख कर कटा सीस पति का, वृंदा भी घबराई ।
   बोली सती, पतिदेव को जिंदा, करदो हे दयाधाम,
   - सारे बोलो जी ।।

4. जालंधर को कर जिन्दा, हरि किया उस में प्रवेश,
   छली गई वृंदा बेचारी, भंग हुआ सति तेज ।
   मारा गया जालंधर युद्ध में, पहुंच गया हरिधाम,
   - सारे बोलो जी ।।

5. वृंदा सति के शाप से विष्णु, हो गए शिला समान,
   भस्म हुई पति संग वृंदा, पायो कीर्ति मान ।
   तुलसी बनकर उसी भस्म से, वरयों शालिग्राम,
   - सारे बोलो जी ।।

6. कहा विष्णु वृंदा तुम मुझको, लक्ष्मी से भी प्यारी,
   तुलसी रूप में पूजा करेगी, तुम्हें ये दुनिया सारी ।
   होगी तुलसी से ही **'मधुप'** अब, पूजा शालिग्राम,
   - सारे बोलो जी ।।

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/33195/title/saare-bolo-ji-jai-tulsi-jai-shaligram

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |